ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

वेदों में वर्णित पर्यावरण भूगोल व पर्यावरण प्रदूषण मुक्ति के उपाय

सुरेश कुमार

व्याख्याता भूगोल

सरस्वती कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

हनुमानगढ़ (राज.)

परिचय :-

सर्वज्ञात है कि वैदिक ऋषियों का ज्ञान सर्वश्रेष्ठ था। महर्षि दयानन्द ने कहा था कि वेद सर्व सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वर्तमान समय में विज्ञान की उन्नति अपनी चरम सीमा पर है। परन्तु वैदिक ज्ञान के सामने विज्ञान भी बौना प्रतीत होता है।

वर्तमान समय में पर्यावरण प्रदूषण की समस्या बहुत बड़ी समस्या है। वैज्ञानिकों द्वारा पर्यावरण प्रदूषण बहुत बड़ी समस्या है। वैज्ञानिकों द्वारा पर्यावरण प्रदूषण मुक्ति के अनेक उपाय प्रस्तुत किए जा चुके हैं। लेकिन वैदिक काल में इन उपायों को पहले ही वर्णित किया जा चुका है।

अध्ययन का उद्देश्य :-

प्रस्तुत शोध कार्य के अध्ययन का उद्देश्य प्राचीन वैदिक ज्ञान को प्रस्तुत करना तथा पर्यावरण एवं पर्यावरण प्रदूषण की मुक्ति के वैदिक तथ्यों का विवेचन करना।

विवरण :-

भूगोल का दर्शन एवम् चिंतन उतना ही प्राचीन है जितना पृथ्वी पर मानव का उद्भव आदिकाल से मानव द्वारा किए गए कार्यो के परिणामस्वरूप वह प्रकृति तथा पर्यावरण को प्रभावित कर रहा है। वेदों की उत्पत्ति मानव की उत्पत्ति के समय से ही मानी जाती है। वेदों में पृथ्वी से सम्बन्धित समस्त प्रकार की जानकारिया दी गई है। वेदों का प्रमुख उद्देश्य

Copyright ⓒ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

पृथ्वी पर विद्यमान प्राकृतिक वस्तुओं की जानकारी प्रदान करना। मानव जीवन को सुविधाओं से परिपूर्ण बनाना।

वेद व पर्यावरण :-

पर्यावरण एक विस्तृत एवम् अर्थवान शब्द है। वर्तमान समय में पर्यावरण अध्येताओं और खोजकर्ताओं को जो अभिप्रेरित है। लगभग वही है जिसे सांख्य दर्शन में प्रकृति विस्तार एवम् ऋग्वेद में पुरूष द्वारा आवृत जगत कहा गया है। सामान्य रूप से वर्णित किया जाए तो पर्यावरण एक परिभाषा से युक्त शब्द है। अपने अर्थ में पर्यावरण मूल अर्थ को छोटा करता हुआ इस संसार की समस्त क्रियाओं व प्रक्रियाओं के योग को स्पष्ट करता है।

"परितोधारक परिधानमस्तु कवचस्धानीयोऽस्तु"

अर्थात चारों और धारण करने वाला प्रभामण्डल जो कवच के समान रक्षा करने की योग्यता रखता है। यह परिधी है। वेदों के भाष्य में स्पष्ट करते हुए इसे "सर्वलोकावरण" अर्थात् समस्त लोकों का आवरण कहा गया है।

पर्यावरण शब्द का अर्थ "सर्वतो भावेन आवृतकरणम्" पूर्णतः चारों ओर से आच्छादित करना होता है। सामान्यतः पर्यावरण में भौतिक सांस्कृतिक तथा आर्थिक सभी प्रभावशाली कारकों को इसमें शामिल किया जाता है।

वनस्पति :-

वेदों में वनस्पति के बारे में विविध रूप से वर्णन किया गया है। वनस्पति के विकास व क्रिया प्रभावों के बारे में वेदों में लिखा गया है कि जिस स्थान पर वनस्पति की अधिकता रहती है। उस स्थान पर किसी प्रकार के भय का आगमन नहीं होता है। अतः हमें वनस्पति के विनाश को रोकने हेतु सजग रहना चाहिए।

अव सृजा वनस्पते ..... दातुरस्तु चेतनम्।

अर्थात् वनों के वृक्ष एवम् उसमें निहित व विद्यमान वनस्पति पदार्थों इत्यादि की वृष्टि के लिए पालना करने वाला हो। वृक्ष वनस्पति वर्षा लाने में सहायक है। वैदिक परम्परा में वृक्षों को ईश्वर का स्थान दिया गया है तथा मनुष्य को प्राकृतिक वनस्पति की व्यवस्था को बनाए रखने हेतु श्रेय कर माना गया है।

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

वेद विज्ञान व प्रदूषण :-

मानव व प्रदूषण की क्रियाओं का आपसी घनिष्ठ सम्बन्ध है। मानव के जन्म से पर्यावरण ने उसे पालन-पोषण करना प्रारम्भ कर दिया था। वैदिक व पौराणिक ग्रन्थों में विभिन्न प्रकार की वनस्पति व जीव जन्तुओं से लेकर प्रत्येक छोटे मोटे के संरक्षक की बात कही गई है।

वेदों में प्राण वायु को स्वच्छ व दोष रहित तथा जीवन में प्रसन्नता भरने वाला बताया गया है।

"मधुवात ऋतायते" अर्थात् हमारे समीप प्रवाहित होने वाली वायु मधुरता युक्त हो तथा जिस औषधी का हम प्रयोग करें वह आरोग्य वर्धक हो। प्रातः कालीन सूर्य उषा (किरणों) का वर्णन करते हुए वेदों में लिखा गया है कि :-

मधु नक्तमुतोषसों मधुमत्वार्थिर्व रजः।

मधु धोस्तु नः पिता।।

अर्थात् प्रातः काल की उषा बेला हमारे लिये मधुर लगने वाली हो, पृथ्वी की धूत से उड़ने वाले सूक्ष्म कण हमारे लिए सुखकारी हो। इसी मन्त्र में वर्णन किया गया है कि वनस्पति प्रकाशदायक सूर्य तथा गाय जैसे उपयोगी पशुओं के मधुयुक्त होने की कामना की गई है।

शुद्ध जल वर्तमान में दुर्लभ हो चुका है। वेदों में जल के बारे में वर्णन करते हुए लिखा गया है कि-

"अपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न उर्जे दद्धातन।

महे रणाय चक्ष से।।

अर्थात - जीवन के प्राणाधार में जल हमारे लिए कल्याणकारी हो। इनसे हम बल शक्ति तथा प्राणों की उर्जा प्राप्त करे।

"वात आ वातु भेषजम्"

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

ऋग्वेद में वायु का समस्त रोगों का नाश करने वाला बताया गया है तथा यह हमारे लिये कल्याणकारी है। वेदों में वायु की महता का वर्णन करते हुए लिखा गया है। "वातस्य नु महिमानम्" अर्थात प्रचण्ड वायु की प्रचण्ड ध्वनि को हम सुनते तो है। लेकिन यह आकार रहित होने के कारण इसके रूप की देखना हमारे लिए सम्भव नहीं है।

इन वर्णन के अतिरिक्त अथर्ववेद में वर्णित 63 मन्त्रों में पर्यावरण तथा उसके महत्व को बताया गया है।

पर्यावरण के महत्व को न समझने के कारण हमने पर्यावरण को अत्याधिक दूषित कर दिया है तथा उसे अपवित्र तथा अस्पृश्य बना दिया है तथा धरातल पर बहने वाली अनेक नदियाँ मानवीय क्रियाकलापों के कारण दूषित होती जा रही है। वनों की अत्यधिक कटाई के कारण अकाल, अनावृष्टि की समस्या उत्पन्न हो गई तथा पर्यावरण प्रदूषण के कारण जीव जन्तुओं की विशिष्ट प्रजातियां विलुप्त होती जा रही है।

वेदों में प्रदूषण मुक्ति के उपाय :-

वैदिक ऋषियों के चिन्तन में पर्यावरण प्रदूषण के उपायों का अच्छा ज्ञान था जो आज के आधुनिक युग में भी नहीं है। वैदिक ऋषियों ने यज्ञ के माध्यम से औषधी गुण सम्पन्न वस्तुओं का अर्गन संयोग से वायु शुद्धि का मार्ग बताया। यज्ञ में मुख रूप से प्रयुक्त होने वाली सामग्री, आभा, पलाश, चन्दन, अगर, पीपल, खेजड़ी, कपूर, चन्दन, जायफल, इत्यादि सुगंधित पदार्थो का प्रयोग करके वायु को शुद्ध बनाया जा सकता है।

ऋग्वेद में अग्नि के बारे में लिखा है कि अग्नि पृथ्वी पर घर्षण से उत्पन्न होती है।

"सप्त दधिषे पदानि" अर्थात अग्नि से सात प्रकार की किरणें निकलती हैं जिनसे निकलने वाली भयंकर काली लपटें हानिकारक होती है। जैसे रेडियोधर्मी तरंगों के विकिरण को समाप्त करने के लिए अच्छी जड़ी बुटियों व गोधृत से यज्ञ करना चाहिए।

उपसंहार :-

वेदों के आधार पर किए गए इस सम्पूर्ण विवेचन से हमें वैदिक काल के उन्नत पर्यावरण संरक्षण का दर्शन होता है तथा इस अध्ययन के माध्यम से हम पर्यावरण को वैदिक पद्धति से संरक्षित, सुरक्षित, व प्रदूषण मुक्त बना सकते है।

Copyright ⓒ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

सन्दर्भ :-

अथर्ववेद - 12/01/12 अथर्ववेद - 12/1 सम्पूर्ण सुक्त

ऋग्वेद - नदी सुक्त 10/75 अथर्ववेद - 11/4/25

यजुर्वेद - 12/28 ऋग्वेद - 10/8/4

प्रसाद हनुमान (2013) वैदिक तत्वों का भौगोलिक विवेचन समसामयिक (संदर्श)

प्रकाशक - चौ. मनसाराम महेन्द्र आर्य स्मृति धर्मार्थ न्यास (बरमसर)

सरस्वती दयानन्द (2048 वि.स.) - ऋग्वेद भाष्य भूमिका (सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा रामलीला मैदान नई दिल्ली)

Copyright ⓒ 2020 Authors